III

मानव पर्यावरण अन्तर्सम्बंध

पर्यावरण और मानव सम्बन्ध

पर्यावरण और मानव का सम्बन्ध निम्नलिखित रूप मे दिखता है।

(1) समायोजन – प्राकृतिक संसाधनों के आधार पर जो उसे उपलब्ध है। अपने व्यवसाय के चयन करता है। मानव जिस क्षेत्र मे रहता है। वह क्षेत्र एक योजना प्रस्तुत करता है।
जैसे– जलमग्नता वाले क्षेत्रो मे यूकेलिप्टस की खेती करना या बाढ़ क्षेत्रो मे धान अथवा जूट का उत्पादन करना क्षेत्र का साथ समायोजन है

(2) अनुकूलन – प्राकृतिक पर्यावरण के अनुरूप जब जीव अपने मे परिवर्तन कर लेते है अथवा पर्यावरण का सामना करने के लिए जीव (वनस्पति जन्तु और मानव) अपने शरीर मे ही जो संशोधन हो जाते है। जैसे– पहाड़ी क्षेत्रो के निवासियो के पैर समुद्र तटीय क्षेत्रो के निवासी करने वाले मनुष्यो के नाविको के हाथो की मांस पेशियां बहुत पुष्ट हो जाती है। अथवा गंदी नाली के निकट निवास करने वाले मनुष्यो को दुर्गंध नही आती है।

(3) रूपान्तरण – प्राकृतिक पर्यावरण मे रूपान्तरण मनुष्य अपनी शक्तियो अवश्यकताओ एवं रूचियो के अनुसार करता है। जैसे– मनुष्य – बांध – नहरे सड़के मकान नगर आदि बनाकर पर्यावरण मे रूपान्तरण करता है। वनो को लगाकर भूमि उपजाऊ बनता है भूक्षरण रोकता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

(4) पारिस्थितिक अनुक्रम – पर्यावरण और मनुष्य के पारस्परिक सम्बन्धों का रूप समय के साथ परिवर्तित और संचित रहता है इसे पारिस्थितिकी अनुक्रम कहते हैं।
जैसे – क्रमशः तकनीकी विकास से औद्योगिक नगर आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो गया है। आज जापान देश तकनीकी उन्नति से विश्व राजनीति में भी महत्वपूर्ण हो रहा है। जबकि पहले ग्रेट ब्रिटेन बहुत महत्वपूर्ण था। जैसे – प्राकृति में जल चक्र नाइट्रोजन चक्र खनिज चक्र चलते रहते हैं धर्म सभ्यताएँ राज्य आदि अपना अस्तित्व खोते एवं जन्म लेते रहते हैं। यथा आज मंचूरिया तिब्बत सिक्किम पृथक राष्ट्र नहीं है। जबकि रूस विभिन्न राष्ट्रों में टूट गया तथा नये 13 राष्ट्रों का जन्म हुआ है।

मानव और पर्यावरण में परिवर्तन सम्बन्ध
इस शताब्दी के प्रारम्भ में फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता के द्वारा भूगोल में एक नई विचारधारा सम्भववाद का जन्म हुआ जिसके अनुसार प्राकृतिक पर्यावरण मात्र पृष्ठ भूमि या योजना ही प्रस्तुत नहीं करता है। इस प्रकार वह अपनी आर्थिक व्यवस्था का विकास करता है जो विचार धारा के अनुसार मनुष्य एक क्रियाशील प्राणी है।
ब्लांश ने लिखा है कि मानव एक भौगोलिक कारक है जिसमे कर्म पृथ्वी के जैविक और अजैविक दोनो प्रकार के तथ्यों में परिवर्तन है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

टेलर ने सम्भववाद की विचार धारा के परिष्कृत कर वैज्ञानिक रूप दिया जिसे इसको स्व वद्दो निश्चयवाद " कहा। उनके अनुसार मनुष्य न तो प्रकृति का दास है। और न ही उसका स्वामी साथ ही न ही मानव के कार्य करने की क्षमता असीमित है।

जैसे – गंगा नहर के निर्माण मे थार की मरुभूमि राजस्थान गेहूँ और कपास का उत्पादन कर रहा है। अथवा छोटा नागपुर खनिजों के दोहन के ही परिणाम स्वरूप औद्योगिक विकास की ओर उन्मुख हुआ है। मध्य प्रदेश के सिंगरौली जिला सीधी मे खुली खदानों से मानव ने वनस्पति एवं पशु जगत को भारी क्षति पहुँचाकर धूल के कृत्रिम पहाड़ व मैदानों का निर्माण कर दिया। आज नर्मदा बाँध सरदार सरोवर टिहरी बाँध एव अन्य बहुउद्देशीय योजनाओं से पर्यावरण और मानव के सम्बन्ध परिवर्तित हो रहे है।

प्रकृति एवं मनुष्य निर्मित नियन्त्रणो मे सम्बन्ध

पर्यावरण भूगोल मनुष्य और उसके आवास के पारस्परिक अन्तसम्बन्धो की व्याख्या करता है आवास या निवास से आशय व्यक्ति जहाँ अधिकांश समय रहता या कार्य करता है। क्योंकि वर्तमान तकनीकी एवं औद्योगिक संस्कृति से पारिस्थितिक तंत्र के स्वभाव मे अन्तर आ रहा है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

भौगोलिक सम्बन्ध – प्रत्येक युग और स्थल का मानव अनुकूलन और रुपान्तरण द्वारा व्यक्त करता है। इसी को भौगोलिक सम्बन्ध कहा जाता है। यह निर्विवाद सत्य है। प्राकृतिक संसाधनों को मनुष्य अपने तकनीकी ज्ञान से अधिकाधिक प्रयोग प्रत्येक युग से करता आया है।

जैसे – छोटा नागपुर के पठार में जब मनुष्य आदि युग मे रहा होगा तो उसने विस्तृत वन सम्पदा से जैविक आवश्यकता हेतु कन्दमूल फल आदि

सेम्पल का विचार उल्लेखनीय है। मनुष्य और प्राकृति की हिस्सेदारी है। मनुष्य मास्तिष्क श्रम पूँजी प्रकृति से कच्चा माल और संसाधन सुलभ कराकर एक श्रेष्ठ जीवन स्तर प्राप्त करता है।

पर्यावरण का नियंत्रण कारी प्रभाव

प्रकृति मनुष्य के लिए एक निश्चित रंगमंच प्रस्तुत करती है। उस रंग मंच पर क्रियाओं की परिधि या सीमाएँ प्रकृति नियंत्रण नही करती

जैसे – मनुष्य खीप चावल रबड़ गरम मसाले पैदा कर सकते है। मनुष्य नियंत्रित परिधि मे स्वतन्त्र है

मनुष्य निर्मित नियंत्रण

मानव की क्रियाएँ कई प्रकार से पर्यावरण को प्रभावित करती है। और पुनः उसे ही नियंत्रित होने से मनुष्य बाध्य हो जाता है। औद्योगीकरण के कारण जीवाश्म ईंधन के दहन से कारखानों एवं परिवहन के साधनो के धुएँ से वायुमण्डल

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

मे कार्बन डाई आक्साइड का दबाव बढ़रहा है। समान्य अवस्था मे यह .03% होनी चाहिए किन्तु कुछ स्थानो पर .04% विगत दशक मे पायी गयी और आज कुछ औद्योगिक क्षेत्रो मे .93% तक हो गई जिससे विगत 50 वर्षो मे पृथ्वी का ताप मान एक डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है। तेजी से बढ़ती तकनीकी औद्योगीकरण जनसंख्या एव नगरीय सभ्यता से पर्यावरण के नये आयाम स्थापित है जिन्हे जनसंख्या वृद्धि अवांछित तत्वो का उत्पादन एवं घटते संसाधनो के सन्दर्भो मे भली भाँति समझा जा सकता है।

शारलॉक ने ठीक ही लिखा है। कि भौतिक विश्व मे परिवर्तन करने वाली शक्तियों मे मानव सबसे ज्यादा शक्तिशाली है। अन्य जीव भी थोड़ा परिवर्तन करते है। पर आधुनिक मानव के सामने वे परिवर्तन नगण्य है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

23/09/2020